रात्री क्लास   ओम शान्ती   5-1-1967

लक्ष्मी नारायण को ही परमेश्वर परमेश्वरी कहते है। अब पुरुषार्थ कर इन जैसा बनना है। और कोई साधु
महात्मा पास ऐसे गोद में नही जावेंगें। यहां तो समझाया जाता है पवि) रहने की प्रतिज्ञा कर फिर गोद
में आओ। ऐसे किसीको गोद में नही लेते है। 12मास पवित्र रहें तब लें सकते है। बाबा बहुत स्ट्रीक्ट रहते
है। पतित दुनिया है तब तो बुलाते है कि आकर पावन दुनिया बनाओ। बाबा बहुत पूछते है पतित हो याँ
पावन हो? तो बिचारें क्या कहें। पहले तो बाबा पूछते है। विकारों में ही जाने वालें को पतित कहा जाता है।
भ्रष्टाचार सें विकार सें तो सब पैदा होतें है। वो लोग समझते है साधु समाज पवित्र है। तुम समझते हो
सो भ्रष्टाचार सें पैदा हुये है। ल.न. का शरीर तो भ्रष्टाचार सें पैदा नही हुआ है नां। धीरे-2स्थापना भी होती
है तो वृधी को तो पाते है नां। बच्चों के लिये कोई नई बात नही है। यह है शिव ज्ञान यज्ञ। शिव बाबा ज्ञान
दे रहे हैं। सदगती दाता वो ऐक हैं। कृष्ण तो हो नहीं सकते है। यह सारी दुनिया पुरानी है। बाप भी
आते ही है नई दुनिया की स्थापना करनें तो पुरानी दुनिया का विनाश करना ही पड़े। गाया हुआ भी है
शंकर दवारा विनाश। इन ज्ञान की बातों को तुम्हारे सिवाय कोई और समझ नही सकते है। यह तो बादशाही
स्थापन होती है। यह है ही राजयोग। शास्त्रों में भी तो कुछ दिखाया नही हुआ है कि राजयोग सीखनें के
के बाद क्या हुआ। पाण्डव गल मरे प्रलय हो गई फिर क्या? दिखाते है 5पाण्डव थे और एक कुत्ता। पहाड़
पर गल मरे यह भी जीव घातहो गया नां। बच्चों को गुप्त अथाह खुशी होनी चाहिये। अभी है ब्रह्मा की
रात। फिरब्रह्मा तो दिन नही बनावेंगें। भगवान को आना पड़ता है। ब्रह्मा का दिन अर्थात ब्राह्मणों का दिन
बनानें। अभी तुम हो संगम युग पर। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिये। ही बाप टीचर सतगुरु
है। यह भी त्रिमुर्ती हो गये नां। वैसे भी त्रिमुर्ती कहते है। क्यों ब्रह्मा दवारा....करते है। यह भी बातें
नहीं समझते है कल्प पहले मुआफिक ड्रामा प्लान अनुसार। इसमें सावधानी भी बड़ी चाहिये। एक बार विकर्म
हुआ तो पद भ्रष्ट हो जावेगा। पाप हो जावे तो झट बता कर क्षमा मांग लेनी चाहिये। छुपाने सें और ही
गिरेंगें। विकर्म हो जावें तो बताओ। इस जन्म के किये हुये भीपाप बताओं। फिर सतोप्रधान बननें लियेबिलकुल
सहज है याद। इसमें माला आद भी टेकना नही है। शिव-2कहना भी नही है। तुम्हारा सब है गुप्तओम

6-1-1967: रात्री क्लास:- बाबा कहनें सें रोमांच खड़े हो जाते है। स्वीट होम,स्वीट राजधानी याद
आती है। बाप सें कल्प पहले मुआफिक वर्सा लेते हो तुम राजधानी का। बाप सिर्फ कहते है मुझे याद करो
तो विकर्म विनाश हो जावें। इड़ीस्ट्रड करेंगें तो खुशी का पारा चढ़ जावेगा। बाप रचना क्या रचते है यह तो
मालूम होना चाहिये नां। एक बार निश्चय हुआ कि यह बाबा है तो फिर संशय थोड़ेई हो सकता है। यह तो
बच्चे जानतेहै यहाँ घर,शरीर की बात नही है। उनके पास आत्माओं का सैक्रेट तो ज्ञान है नही। यहां तो
बच्चे बच्चा भी जानता है कि हम आत्माओं का एक बाप है। हम सब ब्रदर्स है। हम आत्मायें बाप के साथ
रहती है। बाप सब बच्चों को वर्सा दे रहे है। शिव जयन्ती मनाते है। शिव क्या करते है? प्रजापिता ब्रह्मा
क्या करते है। प्रजापिता ब्रह्मा दवारा शिव परमात्मा सभी आत्माओं को वर्सा देते है। प्रजापिता ब्रह्मा पास
कोई प्रापर्टी नही है। यह धणी की प्रापर्टी है। इनको भी बापसें वर्सा मिलता है। बेगर टू प्रिन्स बनतें है।
मुख सें कहते भी है कि सब कुछ ईश्वर नें दिया है। शिव बाबा तो दाता है। सिर्फ युक्ति बताते है कि ममत्व
नां रहे। बाप कहते है जो कुछ भी है उसका ट्रस्टी होकर रहो। पाप आत्मा को दान नही करो नां कि तुमका
भी पाप लग जावें। दान दिया और उस आदमी नें कोई खराब काम किया तो वहाँ दान देनें वाले पर भी
दोष आ जावेगा। अभी हम दान देते है बाप को। इसका ऐवजा विश्व की बादशाही मिलती है। मैं भी
व्यापारी हूँ नां। यह व्यापार है। विरला ही कोई यह व्यापार करें। जो करते है वो पूरा वर्सा लेते है।
ममा नें व्यापार किया नां। ममा बिल्कुल गरीब कुमारी और कितना ऊँचा वर्सा पाया। कुमारी पर कुछ लगता
नही है वो फ्री है। मां नें कुछ भी नही लाया और कितना ऊँचा वर्सा पाया। वारिस भी बनाना है। जो करेंगें
सो पावेंगें। आत्मअभिमानी बनें सें फिर बच्चों को भी भाई समझेंगें। यह भी अच्छा है। बाप कलियुगी वातों
सें मुक्त कर सतयुग में ले जाते है। सो बच्चों का भी कल्याण कारी बनना है। सदैव बाप को याद करना हैओम